प्र. एम्बलायोपिया का उपचार कैसे करते है?

उ. एम्बलायोपिया का उपचार करने का सबसे प्रभावशाली तरीका यह है कि बच्चे को एम्बलायोपिक आँख का उपयोग करने का लिए प्रेरित करना। एक सामान्य दृष्टि निम्नलिखित तरीकों से पायी जा सकती है।

1. यदि दृष्टि में किसी प्रकार का निकट या दूर दृष्टि दोष हो तो उचित नंबर के चश्में के दवारा।
2. जब मोतियाबिंद का पता चले तो मोतियाबिंद हटाकर।
3. स्वस्थ्य आँख को ढककर (Occlusion or patching)
4. यदि एम्बलायोपिया भैंगापन के साथ हो तो ऑपरेशन के द्वारा।

प्र. आँख की जाँच कब करनी चाहिए?

उ.
- समान्यतः सभी बच्चों की आँख की जाँच उनके चौथी वर्षगांठ के पूर्व करानी चाहिए।
- अधिकांश डाक्टर बच्चों की आँख की जाँच उनके मेडिकल परीक्षण में कर लेते है और आवश्यकता होने पर नेत्र विशेषज्ञ के पास जाने की सलाह देते है।
- अगर परिवार के इतिहास में किसी को भैंगापन, मोतियाबिंद या आँख कि जटिल बीमारी रही हो तो नेत्र विशेषज्ञ से इसका इलाज कराया जा सकता है। नई तकनिकों को माध्यम से नेत्र विशेषज्ञ आज नवजात शिशुओं का नेत्र परीक्षण कर सकते है।

एम्बलायोपिया का उपचार जल्द कराएँ और दृष्टि बचाएँ

एम. जी. एम. नेत्र संस्थान

MGM

एम.जी.एम. नेत्र संस्थान

5 मील, विधानसभा की ओर, बलौदाबाजार रोड,
रायपुर (छ.ग.) 493111
फोन : 0771-2104771, 72

भैंगापन

वरदान या अभिशाप?

MGM

एम.जी.एम. नेत्र संस्थान

क्या मैंगापन भाग्यशाली होने का संकेत है?

- मैंगापन (Squint) भाग्यशाली होने का संकेत नही बल्कि ये आपके बच्चों की दृष्टि और पहचानने की क्षमता को प्रभावित करता है।
- दृष्टि की हानि को रोका जा सकता है यदि मैंगेपन का इलाज शीघ्र से शीघ्र किया जाए।
- जैसे – जैसे बच्चे की उम्र बढ़ती जाती है मैंगापन का इलाज उतना ही जटिल होता जाता है साथ ही खोई हुई दृष्टि को भी पुन: प्राप्त कर पाना जटिल हो जाता है लेकिन बाहरी सुंदरता के लिए आँखो को सीधा करने वाले मैंगेपन की शल्यचिकित्सा किसी भी उम्र में की जा सकती है।

मैंगापन

- मैंगापन (Squint) आँखो की असंयोजनता होती है जिसमें दोनो आँखे अलग–अलग दिशाओं में घूम जाती है।
- आँखो का यह असंयोजन कुछ लोगों में स्थिर बना रहता है जबकि कुछ लोगों में कभी–कभी दिखाई देता है।
- आँखो का असंयोजन विचलन किसी भी दिशा में हो सकता है, अंदर, बाहर, ऊपर और नीचे की ओर।
- यदि बच्चों में इसका इलाज सही उम्र में न किया जाए तो वह अवस्था एम्बलायोपिया कहलाती है। जो भविष्य में दृष्टि को स्थायी हानि पहुँचा सकती है।

लक्षण

- एक आँख या दोनो आँखो का अलग–अलग दिशाओं में घूम जाना।
- बच्चों में एक आँख या दोनो आँखो में दृष्टि दोष का होना।
- मैंगेपन वाले बच्चों का कभी–कभी सूर्य की अधिक रोशनी में एक आँख का बंद कर लेना।
- आँखो में कभी–कभी दोहरी आकृतियों का दिखना या उलझन का अनुभव होना।
- तिरछी आँख में धुंधला चित्र।

दृष्टि की क्षति को रोकने का स्थायी उपचार

- दृष्टि दोष से हुए मैंगेपन को चश्में का सही नंबर दोकर उपचार किया जा सकता है।
- सामान्य आँख में पेचिंग पद्धति करके।
- चश्में का सही नंबर और पेचिंग पद्धति से नजर में आने वाले सुधार के बाद मैंगेपन को शल्यचिकित्सा द्वारा उपचारित किया जा सकता है।

शल्यचिकित्सा के पूर्व

- बच्चों में शल्यचिकित्सा पूर्ण निश्चेतक देकर किया जाता है।
- बच्चे को पूर्ण निश्चेतना के उपरांत किसी प्रकार की कमजोरी जैसे बुखार, सामान्य सर्दी–जुकाम इत्यादि होने की संभावना नही होती।
- सामान्यत: मैंगेपन का ऑपरेशन एक आँख में पहले फिर दूसरी आँख में अर्थात एक के बाद एक किया जाता है ।
- आँखो के सफेद भाग में शल्यचिकित्सा की जाती है।

शल्यचिकित्सा के उपरांत

- शल्यचिकित्सा के उपरांत आँख को खुला नही छोड़ा जाता है।
- शल्यचिकित्सा के उपरांत मरीज को एक दिन के लिए अस्पताल में रहना होता है।
- शल्यचिकित्सा के उपरांत पूर्व उपचार को नही रोका जाता है चश्मा जो चिकित्सा के पहले दिया गया था उसे लगाया जा सकता है स्पष्ट नजर के लिए पैचिंग पद्धति भी चिकित्सा जारी रखी जा सकती है।

एम्बलायोपिया (Amblyopia)

प्र. एम्बलायोपिया क्या है?

उ. एम्बलायोपिया का मतलब दृष्टि में कमी होना जो बचपन में आँख का सामान्य विकास न होने से होती है। एम्बलायोपिया को कभी–कभी सुस्त आँख भी कहा जाता है।

प्र. एम्बलायोपिया किन कारणों से होता है?

उ. एम्बलायोपिया निम्नलिखित कारणों से विकसित होता है।

- मैंगापन (Squint)
- दोनो आँख के पावर में बहुत अंतर होना (एक आँख दूसरे की अपेक्षा अलग केंद्रित होना) **Refractive error**
- मोतियाबिंद और **Corneal Opacity**

इनके अलावा गंभीर टोसिस (ऊपर की पलक का नीचे लटक जाना), अविकसित शिशु का जन्म, वंशानुगत अन्य कोई बीमारी जो आँख को प्रभावित करती हो सभी मे एम्बलायोपिया हो सकता है।

एम्बलायोपिया बाल्यावस्था के दौरान होता है। 9 वर्ष की आयु तक के बच्चे दृष्टि का विकास हो ही रहा है उनमें एम्बलायोपिया होने का संभावना सबसे अधिक होती है। सामान्यत: बच्चा जितना छोटा होगा एम्बलायोपिया होने का जोखिम उतना अधिक होता है।

प्र. एम्बलायोपिया कैसे होता है?

उ. रेटिना द्वारा किसी वस्तु को देखने के लिए उचित प्रकाश और दृष्टि संवेदना की आवश्यकता होती है, जो कि आँखों में दृष्टि दोष मोतियाबिंद इत्यादि की उपस्थिति में नही होता है जिसके परिणामस्वरुप एम्बलायोपिया होता है।

प्र. एम्बलायोपिया की पहचान कैसे करें?

उ. एम्बलायोपिया के कुछ लक्षण जैसे मैंगापन, आँख में सफेदी से इसकी पहचान असानी से की जा सकती है। लेकिन कुछ स्थितियों में जैसे कि आँख के अन्दरुनी भाग में किसी प्रकार का रोग होना, आँख में अत्यधिक चश्मे का नम्बर होने पर एम्बलायोपिया की पहचान केवल नेत्र विशेषज्ञ के द्वारा की जा सकती है।